om-21-2014- shiv avtaran-final_Layout 4 1/20/2014 7:44 PM Page 4

तासगांव। 1 दिसम्बर 2013 के एड्स जनजागृति दिवस पर ब्र.कु. डॉ. वैशाली को सम्मानित करते हुए डॉ. पी.बी. बुराडे,सिविल सर्जन,सांगली। साथ हैं डॉ. राम हंकारे,जिला आरोग्य अधिकारी, सांगली तथा अन्य।

हाथरस। ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. सीमा तथा अन्य।

कुचामन सिटी। योग गुरु बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रचना।

दिल्ली-जैतपुर। 'ग्रामीण महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम के दौरान युवा कांग्रेस कमिटी के नेता राजू नागर एवं ओम एनक्लेव के प्रधान मनोज पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उषा।

छतारी- गीता जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित समाजसेवी डॉ.भोला सिंह सूर्यवंशी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कमलेश। साथ हैं मीना बहन, भाई सत्यप्रकाश तथा अन्य।

अहमदनगर-महा.। जनलोकपाल बिल के संसद में पास होने पर समाजसेवी अन्ना हज़ारे को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी। साथ हैं ब्र.कु. दीपक।

सोनपेठ-महा.। स्वामी तत्वानंद भारती को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मीरा तथा सोने के व्यापारी प्रमोद गावर्सकर।

बैंगलुरू। क्रिसमस प्रोग्राम के अन्तर्गत दीप प्रज्वलित करते हुए प्रीस्ट एन्थोनी प्रसाद, किंग जॉर्ज, नारायण स्वामी, एम.फिलीप, ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. नागराज।

कथा सरिता

आख़िरी उपदेश

गुरुकुल के शिष्य अत्यंत उत्साहित थे। उनकी बारह वर्षों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और अब वे अपने घर लौट सकते थे। गुरु भी शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा से प्रसन्न थे और गुरुकुल की परम्परा के अनुसार शिष्यों को आख़िरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे।

सभी शिष्य एक जगह एकत्रित हो गए। गुरु के हाथ में लकड़ी के खिलौने थे। उन्होंने शिष्यों से कहा, 'आपको इन तीनों खिलौनों में अंतर ढूंढ़ने हैं।' सभी शिष्य ध्यानपूर्वक खिलौनों को देखने लगे। तीनों बिल्कुल एक समान दिखने वाले गुड्डे थे। सभी चकित थे कि भला इसमें क्या अंतर हो सकता है। तभी किसी ने कहा, 'अरे, यह देखो, इस गुड्डे के कान में एक छेद है।' यह संकेत काफी था, जल्द ही शिष्यों ने पता लगा लिया और गुरु से बोले, 'इन गुड्डों में बस इतना ही अंतर है कि एक के दोनों कानों में छेद है। दूसरे के एक कान और एक मुंह में छेद है और तीसरे के सिर्फ एक कान में छेद है।'

गुरु बोले, 'बिल्कुल सही!' और उन्होंने धातु का एक पतला तार देते हुए उसे कान के छेद में डालने के लिए कहा। शिष्यों ने वैसा ही किया। तार पहले गुड्डे के एक कान से होता हुआ दूसरे कान से निकल गया। दूसरे गुड्डे के कान से होते हुए मुंह से निकल गया और तीसरे के कान में घुसा पर कहीं से निकल नहीं पाया।

तब गुरु ने कहा, 'प्रिय शिष्यों, इन गुड्डों की तरह ही आपके जीवन में तीन तरह के व्यक्ति आयेंगे। पहला गुड्डा ऐसे व्यक्तियों को दर्शाता है, जो आपकी बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देंगे। ऐसे लोगों से कभी अपनी समस्या सांझा न करें। दूसरा गुड्डा ऐसे लोगों को दर्शाता है, जो आपकी बात सुनते हैं और उसे दूसरों के सामने उगल देते हैं। इनसे बचें और कभी महत्वपूर्ण बातें इन्हें न बताएं। तीसरा गुड्डा ऐसे लोगों का प्रतीक है, जो आपकी बात सुनकर पचा जाते हैं। इन पर आप भरोसा कर सकते हैं। उनसे किसी भी तरह का विचार-विमर्श कर सकते हैं। सलाह ले सकते हैं। इन्हें आपको कभी नहीं खोना चाहिए।

पवित्रता

संत कबीर प्रतिदिन स्नान करने के लिए गंगा तट पर जाया करते थे। एक दिन उन्होंने देखा कि पानी काफी गहरा होने के कारण कुछ ब्राह्मणों को जल में घुसकर स्नान करने का साहस नहीं हो पा रहा है। उन्होंने अपना लोटा मांज-धोकर एक व्यक्ति को दिया और कहा कि जाओ ब्राह्मणों को दे आओ ताकि वे भी सुविधा से गंगा स्नान कर लें। कबीर का लोटा देखकर ब्राह्मण चिल्ला उठे–'अरे! जुलाहे के लोटे को दूर रखो। इससे गंगा स्नान करके तो हम अपवित्र हो जाएंगे।' कबीर आश्चर्यचकित होकर बोले–'इस लोटे को कई बार मिट्टी से मांजा और गंगा जल से धोया, फिर भी साफ न हुआ तो दुर्भावनाओं से भरा यह मानव शरीर गंगा में स्नान करने से कैसे पवित्र होगा?

निर्विकार भाव में निहित है शान्ति

इटली में एक पादरी थे। वे अत्यंत शांत स्वभाव के थे। उन्हें कभी किसी बात पर क्रोध नहीं आता था। यदि कोई व्यक्ति उन्हें कटु वचन कह दे या अप्रिय आचरण करे तो भी उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती थी। वे सदा मुस्कुराते रहते। जिन लोगों को उनका सदा आनंदित रहना पसंद नहीं था, वे तो उन्हें परेशान करने में ही लगे रहते, किंतु पादरी के मुख से कभी विरोध के दो शब्द भी नहीं निकलते। बार बार प्रयास करने के बाद भी कभी कोई पादरी को गुस्सा नहीं दिला पाया। उनकी इस असीम सहनशीलता को देखकर एक दिन लोगों के एक समूह ने उनसे पूछा, 'आप किसी भी बात से प्रभावित नहीं होते, गुस्सा आपको तनिक भी नहीं आता। सहन करने की इतनी शक्ति आपको कहां से मिली?' पादरी ने जवाब दिया, 'जिसका लक्ष्य ऊँचाई पर जाना होता है, वह ऐसे ओछेपन में स्वयं को नहीं डालता। मैं सदैव ऊपर की ओर देखता हूँ और मुझे लगता है कि कहने वाले कुछ भी कहें, किंतु मुझे अपना मन विरोधी विचारों से खराब नहीं करना चाहिए। मैं नीचे देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि आखिर उठने-बैठने और सोने के लिए व्यक्ति को कितनी ज़मीन चाहिए? फिर मेरी दृष्टि घोर कष्ट का जीवन बिता रहे लोगों पर जाती है तो मेरे मन में उनके प्रति करुणा पैदा होती है। याद रखिए कि जिसके मन में करुणा और समभाव होता है, वह कभी क्रोध नहीं कर सकता। मेरी शांति का यही रहस्य है। जो हर स्थिति में निर्विकार भाव से रहना सीख लेता है, वह स्थायी रूप से शांति को उपलब्ध हो जाता है, क्योंकि तब उसे न खुशी भासती है और न दु:ख कष्ट देता है। वह सदैव आनंद भाव में ही रहता है।'

रानी के भक्ति भाव ने शेर को जीता

उत्तर भारत में आंबेरगढ़ के राजा थे माधवसिंह। उनकी पत्नी रत्नावली भले स्वभाव की थी। एक दिन उसने अपनी प्रिय दासी को रोते हुए देखा। कारण पूछने पर बोली, 'ये तो भगवान की भक्ति से मिले अपार सुख के कारण उपजे प्रेमाश्रु हैं।' दासी की बातों ने रानी में भक्ति-भाव जागृत कर दिया। वह सादे-वस्त्र पहनकर भगवान श्रीकृष्ण की उपासना में लीन रहने लगी। राजा माधवसिंह उस समय उज्जैन गए हुए थे। इस बीच, आंबेरगढ़ में कुछ संत-महात्माओं का आगमन हुआ। रत्नावली ने उनके साथ सत्संग किया और लंबी आध्यात्मिक चर्चा भी की। यह जनचर्चा का विषय बन गया। माधवसिंह को वजीर ने पत्र लिखा कि रानी महल छोड़कर साधु-संतों के साथ घंटों तक बैठी रहती हैं। यह पत्र पढ़कर माधवसिंह क्रोधित हुआ। जब वह आंबेरगढ़ लौटा तो पहले रानी को मृत्युदंड देना चाहा, किंतु उसके मंत्रियों ने राज्य में आक्रोश फैलने की आशंका जताई। फिर तय हुआ कि भूखे शेर को रानी के महल के द्वार पर छोड़ देंगे। भूखा शेर रानी का शिकार कर लेगा और हम इसे दुर्घटना बता देंगे। जब शेर भावमग्न रानी की ओर दौड़ा तो दासी 'शेर-शेर' कहकर चिल्लाई पर रत्नावली उसे देखकर बोली, 'नहीं, ये तो नृसिंह भगवान हैं। मेरे गिरधर आज यह वेश लेकर आए हैं।' रानी ने सिंह की आरती उतारी। शेर चुपचाप खड़ा रहा और फिर पलटकर चला गया। राजा अटारी से देख रहा था। माधवसिंह ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी। तब रानी बोली- 'क्षमा मैं नहीं, मेरे गिरधर गोपाल ही कर सकते हैं। मैं आपके लिए उनसे प्रार्थना करूंगी।' माधवसिंह ने रानी के भक्ति भाव के मुताबिक महल की सारी व्यवस्थाएं बदल दीं। सच्चा भक्त निडर और पवित्र हृदय वाला होता है। ऐसे ही लोग ईश्वरीय साक्षात्कार को उपलब्ध होते हैं।

महा शिवरात्रि

- ब्र.कु.सूर्य

परमपिता का इस धरा पर अवतरण... और वह भी काली रात में... परन्तु इस प्रतिदिन वाली रात में नहीं, बल्कि कलियुग के घोर अंधकार में। जब मनुष्य आत्माएँ सबकुछ भूलकर अज्ञान तिमिर में भटकती हुई, माया के पाँच भूतों के अधीन होकर पाप कर्म में प्रवृत्त हो गईं। पाप के कारण जब चहुँ ओर दु:ख अशान्ति व त्राहि-त्राहि हो गई, जब मानव में देवत्व तो छोड़ो मानवता भी नष्ट हो गई। वही समय पुन: धरा पर उपस्थित हुआ है जब कि भक्ति में भी शक्ति नहीं रही और वह स्वार्थ से भरपूर होकर, प्रेमहीन व दिखावा मात्र रह गई है। जब मंदिर धन बनाने का साधन रह गए और धार्मिक ग्रंथ जीवन से बहुत दूर चले गए। जब काम-वासना ने अपना जाल चारों ओर फैला दिया और जब इन मनोविकारों की अग्नि में मानव सभ्यता जलकर नष्ट होने को है। ऐसे दु:ख, अशान्ति व रोग-शोक के काल में अनेक लोग भगवान को पुकार रहे हैं कि - हे मुक्ति दाता, उद्धारक, हे सुख दाता, दु:ख हर्ता आओ और हमें मुक्त करो।

क्या प्रभु पधारेंगे?

भगवान के दिव्य अवतरण की बात भारत में बहुचर्चित है। श्रीमद्भगवद्गीता में तो भगवान ने गारंटी दी है कि मैं धर्म-ग्लानी के समय धर्म की पुन:स्थापना के लिए आता हूँ और पुन: आऊँगा। क्या अब धर्म-ग्लानी का समय नहीं है? क्या मनुष्य ने अपनी पवित्रता नहीं खोई है? क्या कलियुग के अंत के सभी लक्षण प्रकट नहीं हो रहे हैं? क्या कन्याएं अपने मुख से वर नहीं माँग रही हैं? क्या कन्याओं ने अपनी पवित्रता नष्ट नहीं कर दी है? क्या अन्न पुड़ियों में नहीं बिक रहा है? क्या गाय विष्टा नहीं खा रही है? क्या मनुष्य ने सभी मर्यादाएं नहीं तोड़ दी हैं? क्या कलियुग के विनाश के लिए एटम बम नहीं बन गए हैं? सभी भगवान को पुकार रहे हैं तो उन्हें अवश्य आना चाहिए। क्या प्यार के सागर परमपिता अपने वत्सों का दु:ख हरने नहीं आएंगे? उन्हें अवश्य आना चाहिए। क्या गीता के भगवान अपना वायदा नहीं निभाएंगे? अवश्य निभाएंगे।

शिव अजन्मा हैं, परन्तु अवतार लेते हैं

कुछ लोग शिव नाम सुनकर महादेव की ओर देखते हैं और सोचते हैं कि महादेव को तो देह है फिर वे अजन्मा कैसे हुए? उनका बाल रूप भी दिखाते हैं, परन्तु उनके माता-पिता की कहीं चर्चा नहीं हुई। हम जिन शिव की चर्चा कर रहे हैं वे महादेव से भिन्न निराकार परमात्मा हैं जो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता हैं। जो देह रहित, अजन्मा, मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता, सर्व के परमपिता हैं। वे ही धर्म-ग्लानी के समय आते हैं। वे ही ज्ञान के सागर भी हैं इसलिए सत्य ज्ञान देकर व राजयोग की शिक्षा सिखाकर पुन: धर्म की स्थापना करते हैं तथा मनुष्य को देवता बनाते हैं। वे परकाया प्रवेश करते हैं, जन्म नहीं लेते। वे देह के बंधन से मुक्त रहते हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा के मानव तन में आते हैं, इसे ही अवतार कहते हैं।

वे आ चुके हैं

वर्तमान समय परमात्मा के अवतरण का समय है। कलियुग अपनी चरम सीमा पर है। सृष्टि चक्र के अनुसार कलियुग के बाद पुन: सतयुग आना है। युग परिवर्तन का दिव्य कार्य वे स्वयं कर रहे हैं। परन्तु इसके लिए वे मनुष्य आत्माओं को सत्य ज्ञान देते हैं और सम्पूर्ण पावन बनाकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। उन्हें माया जीत बनाते हैं, स्मृतियाँ दिलाते हैं और शक्ति देकर शिव-शक्तियाँ बनाते हैं। यह कार्य वे पिछले 78 वर्ष से कर रहे हैं, बल्कि अब तो स्थापना का उनका यह कार्य पूर्ण होने को आया है। कुछ ही समय में कलियुगी विश्व समाप्त हो जाएगा और धरा पर देव-युग का आगमन हो जाएगा।

भक्तों का आह्वान

शिव रात्री के दिन मंदिरों में बहुत रौनक होगी। चारों ओर भक्तगण शिवालयों की ओर जाते नज़र आएंगे। शिव के व्रत रखेंगे। रात्री जागरण करेंगे - इस कामना से कि शिव दर्शन देने आएंगे। शिव भक्ति का फल देने को आ चुके हैं। वे उन सभी भक्तों का आह्वान कर रहे हैं जिन्होंने द्वापर युग से उनकी भक्ति की है। वे उन्हें भक्ति का फल देने पुन: अवतरित हुए हैं। वे आह्वान कर रहे हैं कि हे मेरे भक्तों, हे मेरे वत्सों, आओ ... मैं तुम्हारे पास आ गया हूँ। आओ मुझसे सत्य ज्ञान लेकर मुक्ति और जीवनमुक्ति का अधिकार पा लो। तुम अज्ञान की गहरी नींद में सो गए हो। अब जागो। एक रात जगने से क्या होगा, अब सदा के लिए जाग जाओ। स्वयं को पहचानो और मुझ सर्वशक्तिवान से योग लगाओ तो तुम मेरे धाम में आ जाओगे। तुम्हारे सभी विकर्म नष्ट हो जाएंगे और तुम अनन्त सुखों को प्राप्त करोगे।

अब सदा का व्रत रखो

भक्त गण इस दिन व्रत रखते हैं, इसे भोले का व्रत भी कहते हैं और सोचते हैं कि भोलेनाथ तो सहज ही प्रसन्न होते हैं, वे तो खाली झोली भर वरदान देते हैं। यह यत्य है कि बिगड़ी को बनाने वाला शिव आकर सबकी बिगड़ी को बना रहे हैं। वे सर्व खज़ानों से हमारी झोली भर रहे हैं। वे ज्ञान रत्नों से सभी पार्वतियों का श्रृंगार कर रहे हैं। वे प्रसन्न हुए हैं और प्रसन्न होकर सभी को वरदान दे रहे हैं।

उनकी आज्ञा है कि अब पवित्रता का व्रत धारण करो। एक दिन के लिए नहीं बल्कि सदा के लिए क्योंकि तुम आत्माएं पवित्र थीं और अब विकारों की दलदल में फँस चुकी हो। मैं तुम्हें पावन बनाकर मुक्तिधाम वापस ले जाऊँगा। अनेक मनुष्यात्माओं ने पवित्रता का व्रत धारण कर लिया है। इस व्रत को धारण करने से धरा स्वर्ग बनेगी और हम शिव के मिलन का परमानन्द प्राप्त कर सकेंगे। आप भी शिव की संतान हो, केवल भक्त नहीं हो। हे शिव भक्तों, भाँग पीने से शिव प्रसन्न नहीं होंगे। वे प्रसन्न होंगे आज्ञाकारी बनने से। तो आओ, शिव से मिलन मनाओ। अपने मनोविकारों को उन पर बलि चढ़ा दो। स्मृति स्वरूप होकर आओ और उनसे अमृत पान करके अमृत्व को प्राप्त करो।

बोंगईगांव-असम। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ए.सरण, एक्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि., ब्र.कु. लोनी तथा अन्य भाई बहनें।

दिल्ली-महरौली। ब्रह्म सिंह तंवर को छत्तरपुर क्षेत्र का विधायक बनने पर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

शाहपुर-उ.प्र.। समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव कुंवर प्रताप सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पारुल।

इन्दौर। अभय प्रशाल में आयोजित सांस्कृतिक संध्या 'आनंद सरगम' में कार्यक्रम के दौरान नृत्य प्रस्तुत करते हुए शक्ति निकेतन छात्रावास की छात्राएं।

उदयपुर। 'लिकिंग हार्ट्स टूरिज़म कैम्पेन' कार्यक्रम में होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष सुभाष सिंह राणावत, होटल एसोसिएशन के सेक्रेट्री के.पी.अग्रवाल, तालदार ट्रैवल्स के मालिक दीपक तालदार, आर्चीज़ ग्रुप और सैफ्रोन होटल के मालिक रिशभ भनावत तथा ब्र.कु. गीता।

जबलपुर। दैनिक समाचार पत्र "पत्रिका" के जबलपुर संस्करण की चौथी वर्षगांठ पर आयोजित "सर्व धर्म सम्मेलन" में अपने विचार व्यक्त करते हुए महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद जी। मंचासीन हैं सुरेश कुमार, हाजी लाल क़ादरी एवं ब्र.कु.विमला।

नरसिंहपुर। "विशाल आध्यात्मिक सम्मेलन" का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गीता, एम.एल.ए. जलम सिंह पटेल, कृषि उपज मंडी प्रेसीडेंट रविन्द्र पटेल, बी.एल.ए पावर प्लांट डायरेक्टर एस.आर.मिश्रा, के.एन.गर्ग एवं ब्र.कु.कुसुम।

बड़ौदा-जी.आई.डी.सी। गुजरात की सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री फरीदा मीर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.धीरज। साथ हैं ब्र.कु.रीटा।